Vijay Kumar Ass
Dept in History
V.S College Rajnagar
Degree part - III

Paper - V

Mansabdari System under the Mughals

फ्रेंकोई बर्नियर को माना
मुगलकालीन आर्थिक व्यवस्था का जनक ... एक चिकित्सक होते हुये मुगलों कि अर्थ व्यवस्था एवं संचालन पर पूर्ण प्रकाश डाला है। बर्नियर ने अपनी पुस्तक Travells in Mughal empire. मै मुगलकालीन सामाजिक आर्थिक और शासन व्यवस्था का विश्लेषण किया है।

मनसब शब्द का अर्थ पद प्रतिष्ठा अथवा श्रेणी बद्द पद है। ... प्रशासन मे सरकारी कर्मचारियो और अधिकारियो के पद और वेतन का निर्धारण उनके श्रेणी और सम्मान के अनुसार होता था। ... निश्चय मनसब, के द्वारा होता था। इरविन का कथन है कि मनसबदार मुगल साम्राज्य के अधिकारी का बद्द पद है और अधिकारी वर्ग मे उसके दर्जे, वेतन तथा सम्राट के दरबार मे उसके स्थान को निश्चय करता है।, वस्तुत: मुगलकालीन सैनिक तथा नागरिक प्रशासन का मूलाधार मनसबदारी प्रथा थी। मनसब कि संख्या से शासन मे उस व्यक्ति के स्थान का बोध होता था। वही मुगल अभिजात्र वर्ग जो मुगल काल मे लोक सेवा एवं सेना का सम्मिलित शक्ति रखता था।

डा॰ हरिशंकर श्रीवास्तव के अनुसार — मनसब शब्द का अर्थ पद, प्रतिष्ठा पद अथवा श्रेणीबद्द पद है। मनसबदारी प्रथा का संगठन चंगेज खां के द्वारा तैयार किया गया दशमलव प्रणाली पर आधारित था जिसे अकबर ने भी मनसबदारी प्रथा मे इसी दशमलव पद्धति को अपनाया था। अकबर ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मनसबदारी व्यवस्था आरम्भ किया था।

ए० जे० कैसर के अनुसार अकबर ने 1573-74 में मनसबदारी प्रथा का आरम्भ किया था। मनसबदारी प्रथा घुड़सवार सेना के आधार पर तय किया गया था। इसके अनुसार सम्राट किसी व्यक्ति को एक-एक संख्या का (10, 20, 100, 500, 1000) मनसबदार नियुक्त करता था। इस आधार पर मनसबदार को राज्य से नगद या जागीर के रूप में वेतन प्राप्त होता था। इसके बदले में उसे नियमानुसार घोड़े, हाथी, बैलगाड़ियाँ, भारवाहक पशु सैनिक इत्यादि रखने पड़ते थे। इसके खर्च में जो भी धन खर्च करने के बाद बचता था वही उस मनसबदार का वेतन होता था। मनसबदार को राज्य द्वारा निर्धारित सेना तथा राजस्व संबंधी नियमों का पालन करना पड़ता था।

मनसबदार को दो पद जात, एवं सवार, प्रदान किये जाते थे। मनसबदार को जितने सैनिक रखने पड़ते थे वह जात, का सूचक था और जितना सवार, घुड़सवार रखना पड़ता था वह सवार का सूचक था। 1611 ई० में जहाँगीर ने खुर्रम को 50000 का मनसब दिया था अर्थात उसके पास 10000 सैनिक तथा 50000 घुड़सवार थे।

अबुलफजल ने अपने ग्रंथ आइने-अकबरी में 66 मनसबों का उल्लेख किया है। अकबर के काल में सबसे छोटा मनसब 10 का एवं सबसे बड़ा मनसब 10000 का था। 5000 से ऊपर मनसब शहजादों को दिया जाता था। जहाँगीर के समय में राजकुमारों को 40000 तथा शाहजहाँ के समय में 60000 तक का मनसब राजकुमारों को दिया जाता था।

मनसब में तीन श्रेणियाँ होती थी - प्रथम श्रेणी जात मनसब 5000 तथा सवार मनसब 5000 है तो वह प्रथम श्रेणी का मनसबदार होता था। द्वितीय श्रेणी के मनसबदार को जात मनसब 5000 तथा सवार मनसब 2500 से कम होता था। तृतीय श्रेणी में जात मनसब 5000 तथा सवार मनसब 2500 से कम होता था।

मनसबदारों कि नियुक्ति, पदोन्नति एवं पदच्युत सम्राट द्वारा ही होता था

JARY
Mo Tu We Th
1 2 3 4 5
7 8 9 10 11 12
14 15 16 17 18 19
21 22 23 24 25 26
28 29 30 31

Scanned with Can

10000 से 500 तक का मनसबदार "मनसबदार कहलाता था 500 से 2500 तक का मनसबदार "अमीर कहलाता था, 2500 से अधिक का मनसबदार 'अमीर-ए-उम्दा कहलाता था। जहाँगीर के काल में दु अस्पा एवं सी-अस्पा प्रणाली लागू हुई घोड़े कि संख्या दु अस्पा एवं सी अस्पा से तीन गुणा घोड़े कि संख्या थी। एक अस्पा को सवार के पद के बराबर घोड़े कि संख्या रखनी पड़ती थी।

मनसबदारो का वेतन नगद स्वरूप मिलता था कभी-कभी वेतन के बदले जागीर दे दी जाती थी। मनसबदारों के लिये हुलिया तथा दाग अनिवार्य था। सैनिको का पुरानाम पता एक बही मे दर्ज होता था इसके अतिरिक्त घोड़ो को दाग कर निशान बना दिया जाता कि बदला नहीं जा सके। अकबर के शासन काल मे मनसबदारों को दिये जाने वाले वेतन निम्न था।

द/दर्जा	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	सैनिक व्यय
5000	30000	29000	28000	10600
3000	17000	16800	16700	6700
1000	8200	8100	8000	3000
500	2500	2300	2100	1170
50	250	240	230	185
10	100	82½	75	44

इस प्रकार मनसबदारी व्यवस्था मुगलसेना का प्रमुख आधार बना। इसने मुगल साम्राज्य के विस्तार एवं सुव्यवस्था कि स्थापना मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अकबर के काल मे यही मनसबदारी व्यवस्था जागीरदारी मे परिवर्तित हो गया। अकबर इन्ही मनसबदारो को जागीरदार बना दिया जिसे जागीरदारी व्यवस्था कहा जाता था

Scanned with Can